पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशित: 16.05.2014 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

शिविरों के युवा निर्माण कार्य में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् को तन, मन, धन से सहयोग प्रदान करें। लंगर के लिये खाद्य सामग्री भी भेज सकते हैं

वर्ष-30 अंक-24 ज्येष्ठ-2071 दयानन्दाब्द 190 16 मई से 31 मई 2014 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.05.2014, E-mail : aryayouth@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

दिल्ली में आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर का भव्य शुभारम्भ

बालिकायें आत्म निर्भर, स्वालम्बी व निर्भीक बने -रेखा गुप्ता (पार्षद)

सोमवार, 12 मई 2014, केन्द्रीय आर्य युवती परिषद् दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में आर्य समाज, विशाखा एनक्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली में ''आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर'' का भव्य शुभारम्भ हो गया। शिविर में 95 बालिकायें प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं। मुख्य अतिथि श्रीमती रेखा गुप्ता ने कहा कि आज के युग में बालिकायें स्वालम्बी, आत्म निर्भर व निर्भीक बने तभी समाज का मुकाबला कर सकती है ओर अपना सम्मान जनक स्थान बना सकती हैं। चित्र में मंच पर श्रीमती सुषमा शर्मा भजन गाते हुए व बायें से राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य, सुरेन्द्र गुप्ता, रविन्द्र मेहता, रेखा गुप्ता (पार्षद)। द्वितीय चित्र में बायें से सरोजनी दता, उर्मिला आर्या, निर्मल जावा, माता कृष्ण बाला, दयावती सचदेवा, सुषमा शर्मा, सुधा गुप्ता, नीता खन्ना व इन्दु मेहता। समाज के संरक्षक श्री सत्यप्रकाश आर्य, प्रधान श्री रणसिंह राणा, मंत्री श्री ओमप्रकाश गुप्ता, श्री सूर्यप्रकाश डुडेजा, प्रबन्धक निर्मल जावा, सुषमा अरोड़ा, सुशील घई, आ. धूमसिंह शास्त्री, रतन सिंह, मनीषा ग्रोवर, श्री कृष्णचन्द पाहुजा, श्री व्रतपाल भगत, श्री धर्मपाल आर्य, श्री सौरभ गुप्ता, श्री रामदेव आदि के सहयोग से शिविर सफलता पूर्वक प्रारम्भ हो गया। समारोह की अध्यक्षता श्रीमती आदर्श सहगल ने की व ध्वजारोहण सुश्री सरोजनी दता ने किया। कुशल संचालन श्रीमती उर्मिला आर्या ने किया।

श्रीमती उर्मिला आर्या व राजीव आर्य का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, श्री ओमप्रकाश गुप्ता, इन्दु मेहता। दायें चित्र में बालिकायें सैनिक नमस्ते करते हुए।

11 वां स्वामी दीक्षानन्द स्मृति दिवस तपोवन आश्रम देहरादून में सम्पन्न

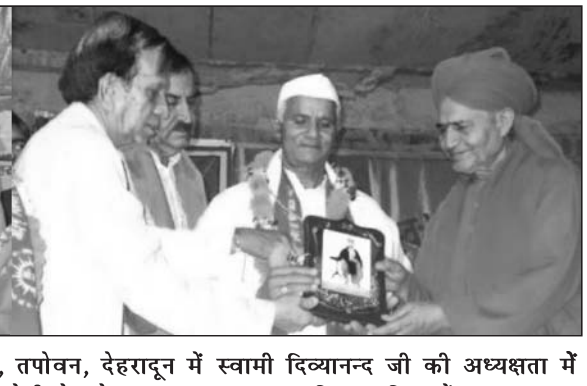

रविवार, 11 मई 2014, मूर्धन्य आर्य संन्यासी स्वामी दीक्षानन्द जी का 11 वां स्मृति दिवस वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून में स्वामी दिव्यानन्द जी की अध्यक्षता में सोल्लास सम्पन्न हुआ। अग्निहोत्री धर्मार्थ ट्रस्ट के तत्वावधान में आयोजित समारोह का उद्घाटन प्रधान श्री दर्शन अग्निहोत्री ने ओ३म् ध्वज फहरा कर किया। चित्र में महात्मा प्रभु आश्रित स्मृति में ''वेद मित्र सम्मान'' से सम्मानित श्रीमती रविश व रविन्द्र मेहता का सम्मान करते आचार्या अन्नपूर्णा जी व श्रीमती सरोज अग्निहोत्री। ''माता कृष्णा-महेश रहेजा'' स्मृति में ''आर्य श्रेष्ठी'' सम्मान से सम्मानित प्राचार्या श्रीमती उषा नेगी जी व माता शान्तिदेवी गणेशदास अग्निहोत्री की स्मृति में ''संगीत शिरोमणी'' सम्मान से पं. रूबेल सिंह आर्य को सम्मानित करते श्री दर्शन अग्निहोत्री व स्वामी दिव्यान्द जी। वैदिक विद्वान डा.सुन्दरलाल कथूरिया ने कहा कि स्वामी दीक्षानन्द जी के ग्रन्थों का स्वाध्याय और उनके उपदेशों पर आचरण ही उनके प्रति वास्तविक श्रद्धाजंलि है। समारोह का संचालन केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के महामंत्री श्री महेन्द्र भाई ने किया। आचार्य विद्यादेव जी, आचार्य आशीष जी, आचार्या अन्नपूर्णा जी, डा.वेदप्रकाश गुप्ता, पं.उम्मेद सिंह विशारद, डा.धंन्जय आचार्य, आर्य तपस्वी सुखदेव जी, श्री इन्दुप्रकाश त्रिवेदी आदि के प्रेरक उदबोधन हुए। मंत्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा, श्री ठाकुरसिंह नेगी, श्री मनमोहन कुमार आर्य, श्री योगराज अरोड़ा, रणजीतराय कपूर, जीवनचन्द जोशी, जितेन्द्रसिंह तोमर, अरूण आर्य, विनोद कालरा, रामकुमार सिंह, यशोवीर आर्य, सुनील गर्ग, प्रवीन आर्य के पुरूषार्थ से समारोह सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के आर्य युवक सेवा में जुटे रहे।

जहां नहीं होता कभी विश्राम ॥ ओ३म् ॥ आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत)

के तत्वावधान में

युवा शक्ति को चरित्रवान, देशभक्त, ईश्वर भक्त, सस्कारवान बनाने का अभियान

बलमुपास्व

1. राष्ट्रीय युवक चरित्र निर्माण शिविर

शनिवार 7 जून से रविवार 15 जून 2014 तक

स्थान : ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल, सैक्टर-44, नोएडा

सम्पर्क : श्री संतोष शास्त्री - 9868754140, श्री प्रवीन आर्य - 9911404423

2. दिल्ली आर्य कन्या शिविर

दिनांक 11 मई से 18 मई 2014 तक.

स्थान : आर्य समाज, विशाखा एन्कलेव, पीतमपुरा, दिल्ली

सम्पर्क-रचना आहूजा-9311175772, अर्चना पुष्करना-9899555280

उर्मिला आर्या-9711161843, सुषमा अरोड़ा-9711137590

3. उड़ीसा आर्य युवक शिविर

दिनांक 2 मई से 10 मई 2014 तक

स्थान : गुरूकुल वेद व्यास, राउरकेला, उड़ीसा

सम्पर्क : आचार्य धनेश्वर बेहरा - 09438441227

4. राजस्थान युवक निर्माण शिविर

दिनांक 25 मई से 1 जून 2014 तक

स्थान-डी.वी.एम. पब्लिक स्कूल, बहरोड

श्री रामकृष्ण शास्त्री-09461405709, मा.सत्यपाल आर्य-09001982643

5. फरीदाबाद युवक निर्माण शिविर

दिनांक 1 जून से 8 जून 2014 तक

स्थान : राजकीय उच्च.मा.विद्यालय, एन.एच-3

फरीदाबाद (हरियाणा)

सम्पर्क : श्री सत्यपाल शास्त्री - 09810464750

सत्यभूषण आर्य-9818897097, मनोज सुमन-9810064899

6. पलवल युवक निर्माण शिविर

दिनांक 9 जून से 15 जून 2014 तक

स्थान : महर्षि दयानन्द स्मारक केन्द्र, वन्चारी,

होडल, पलवल (हरियाणा)

सम्पर्क : स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, फोन-09416267482

7. मध्यप्रदेश युवक चरित्र निर्माण शिविर

दिनांक 25 मई से 1 जून 2014 तक

स्थान : आर्य समाज, 219 संचार नगर, इन्दौर

सम्पर्क :- आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार

फोन : 09977967777, 0731-3259217

8. यमुना नगर आर्य कन्या शिविर

दिनांक 2 जून से 8 जून 2014 तक

स्थानःवैदिक वृद्व संन्यास आश्रम, जगाधरी वर्क्स शॉप रोड,

यमुनानगर (हरियाणा). स्वामी सच्चिदानन्द जी-09416395561,

श्री मनोहरलाल चावला, फोन : 09813514699

9. उत्तराखण्ड युवक चरित्र निर्माण शिविर

दिनांक 28 मई से 3 जून 2014 तक

स्थान : गुरूकुल कण्वाश्रम, कोटद्वार,पौड़ी गढ़वाल

सम्पर्क : योगीराज ब्र.विश्वपाल जयन्त - 09837162511

10. करनाल युवक निर्माण शिविर

दिनांक 18 जून से 22 जून 2014 तक

स्थान : आर्य समाज, प्रेम नगर,करनाल (हरियाणा)

स्वतन्त्र कुकरेजा-09813041360, हरेन्द्र चौधरी-09541555000,

रजनीश चोपड़ा-9813073173

11. जम्मू युवक चरित्र निर्माण शिविर

दिनांक 23 जून से 29 जून 2014 तक

स्थान : आर्य समाज, जानीपुर, जम्मू

सम्पर्क : श्री सुभाष आर्य, फोन - 09419301915

12. जीन्द युवक चरित्र निर्माण शिविर

दिनांक 18 मई से 25 मई 2014 तक

स्थान : जय भारत हाई स्कूल, रोहतक रोड़, जीन्द

सम्पर्क : श्री योगेन्द्र शास्त्री, फोन : 09416138045

13. झारखण्ड आर्य कन्या निर्माण शिविर

दिनांक 18 मई से 2 जून 2014 तक

स्थान : डी.ए.वी.नन्दराज, रांची

सम्पर्क : आचार्य कृष्णप्रसाद कौटिल्य - 09430309525

श्री पूर्णचन्द आर्य - 09431535364

14. जयपुर युवक चरित्र निर्माण शिविर

दिनांक 16 जून से 22 जून 2014 तक

स्थान : संस्कार छात्रावास, जी.एल.सैनी कॉलेज आफ नर्सिग

7-8, राधा निकुन्ज सी., रामपुरा मोहनपुरा रोड, केसरनगर चौराहे

के पास, जयपुर. सम्पर्क : यशपाल यश-09875035146

15. कैथल आर्य मानव निर्माण शिविर

दिनांक 1 जून से 8 जून 2014 तक

स्थान : गुरू ब्रह्मानन्द आश्रम, पुण्डरी, कैथल

सम्पर्क : श्री राजेश्वर मुनि जी - 09896960064

16. यमुना नगर युवक निर्माण शिविर

दिनांक 1 जून से 8 जून 2014 तक

स्थान : यमुना नगर, हरियाणा

सम्पर्क : श्री गोपाल शर्मा - 09467956050

17. बिहार युवक चरित्र निर्माण शिविर

दिनांक 22 जून से 29 जून 2014 तक

स्थान : आर्य समाज, समस्तीपुर, बिहार

सम्पर्क : आचार्य नवलकिशोर जी - 09771257878

श्री भारतेन्दू आर्य - 09430099239

18. उत्तर प्रदेश युवक चरित्र निर्माण शिविर

दिनांक 7 जुलाई से 13 जुलाई 2014 तक

स्थान : गुरूकुल संस्कृत महाविद्यालय,शुक्रताल, मुजफ्फरनगर

सम्पर्क : आचार्य पवनवीर जी - 09639661532

सभी शिविरों के 'समापन समारोह' पर दल बल सहित पहुंचे व तन-मन-धन से सहयोग प्रदान करें

निवेदक

डा० अनिल आर्य	यशोवीर आर्य	रामकुमार सिंह	महेन्द्र भाई	धर्मपालआर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
9810117464	9312223472	9868064422	9013137070	9871581398

केन्द्रीय कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली -110007. फोन - 9868661680

Email: aryayouth@gmail.com • Website : www.aryayuvakparishad.com Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

'यदि आर्य समाज स्थापित न होता तो क्या होता?'

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

इस समय वेद व सृष्टि सम्वत् 1,96,08,53,115 आरम्भ हो रहा है। द्वापर युग की समाप्ति पर लगभग 5,000 वर्ष पूर्व महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध हुआ था। इस प्रकार लगभग 1,96,08,48,00 वर्ष पूर्व महाभारत युद्ध तक सारे भूमण्डल पर एक ही वैदिक धर्म व संस्कृति विद्यमान थी। महाभारत युद्ध से धर्म व संस्कृति का पतन आरम्भ होता है जो अब से 139 वर्ष पूर्व अपनी चरम पर था। इस समय वैदिक धर्म व संस्कृति का मूल स्वरूप अप्रचलित व अज्ञात हो गया था तथा उसके स्थान पर अन्ध विश्वास, कुरीतियां, अज्ञान ने सर्वत्र अपने पैर पसारे हुए थे। निराकार, सर्वव्यापक, सर्वान्तरयामी, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान व सच्चिदानन्द ईश्वर की उपासना न केवल ऐतिहासिक वस्तु बन कर तिरस्कृत हो चुकी थी अपितु विस्मृत भी कर दी गई थी। देशवासियों को पता ही नहीं था कि कभी देश के शत-प्रतिशत लोग सृष्टिकर्ता ईश्वर के निराकार व सर्वव्यापक स्वरूप की योग दर्शन की विधि के अनुसार उपासना करते थे, अंहिसात्मक अग्निहोत्र यज्ञ करते थे, जीवित माता-पिता व वृद्धों का श्राद्ध व तर्पण होता था, मांसाहार वर्जित था, मदिरापान बुरा माना जाता था, आज जैसा स्त्री-पुरूषों का फैशन तो कभी इस भारत भूमि पर पूर्व में था ही नही। जब भारत में पतन की यह स्थिति थी तो इसका प्रभाव सारे विश्व पर पड़ना स्वाभाविक था। कारण यह कि मनुस्मृति के अनुसार यह देश अग्रजन्मा मनुष्यों को उत्पन्न करता था। संसार भर के लोग अपने-अपने लिये धर्म, संस्कृति, चरित्र व ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा लेने इसी देश में आया करते थे। भारत संसार का गुरू था। महाभारत युद्ध के पश्चात जब भारत के लोगों ने विश्व में धर्म-संस्कृति-चरित्र-ज्ञान व विज्ञान की शिक्षा देने के लिए चारों दिशाओं के देशों में जाना बन्द कर दिया या यह कहें कि विदेशों में जाना बन्द हो गया तो वहां घोर अन्धकार फैल गया। ऐसी स्थिति में भारत से बाहर प्रथम पारसी मत का उदय हुआ। इसके प्रचारक व संस्थापक महात्मा जरदुश्त थे। पारसी मत का धर्म पुस्तक जन्दावस्था है। क्या जन्द शब्द छन्द का अपभ्रंस तो नहीं है?जन्दावस्था वेदों से अधिकांशतः प्रभावित है। इसके बाद ईसा का जन्म होने पर उन्होंने अपने प्रयासों से धर्म-संस्कृति का अध्ययन किया, सोचा व विचारा। वह जितना अध्ययन कर सके, उनके अनुरूप उनके शिष्यों द्वारा क्रिश्चियनियटी या ईसाई मत का प्रादूर्भाव हुआ। स्वाभाविक था कि धर्मविहीन हो चुके मनुष्यों को धर्म की आवश्यकता थी। अपनी अज्ञानता के कारण जनसाधारण को जो व जैसा ज्ञान मिला उसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। उस समय वहां के लोगों के लिए यह सम्भव नहीं था कि वह अपनी विवेक बुद्धि का प्रयोग कर सत्य व असत्य को जान पाते। यह मत भी पल्लिवित व पोषित होता रहा। हमें अनुभव होता है कि इस मत ने ईश्वर व जीवात्मा का जो स्वरूप प्रस्तुत किया वह ईश्वर व जीवात्मा के सत्य व यथार्थ स्वरूप से भिन्न है। आज यद्यपि ज्ञान-विज्ञान ने बहुत उन्नति कर ली है, परन्तु धर्म-मत-सम्प्रदायों-मजहबों के सिद्धान्त व मान्यतायें अपरिवर्तनीय बनी हुई हैं, अतः यह वैसी की वैसी हैं। आज कुछ आधुनिकता, ज्ञान की उन्नति व आर्य समाज के वेदों के प्रचार से प्रभावित होकर उनकी तर्क व युक्तियों से युक्त व्याख्यायें करने का प्रयास किया जाता है। यह यद्यपि अच्छा है परन्तु हम अनुभव करते हैं कि सभी मतों व धर्मो की एक-एक बात का बहुत ही गहराई से विचार कर निर्णय करना चाहिये और यदि कोई बात असत्य व अव्यवहारिक सिद्ध हो तो उसे आधुनिक सत्य ज्ञान के परिप्रेक्ष्य में संशोधित कर लेना चाहिये। अनावश्यक खींच-तान नहीं करनी चाहिये। हमारे वैज्ञानिक लोग भी निरन्तर ऐसा करते आ रहे हैं जिसका परिणाम व प्रभाव यह है कि आज विज्ञान आकाश छू रहा है जो कि 100 या 200 वर्ष पहले अपनी शैशवास्था में था। इसके विपरीत आज विगत 4 से 5 हजार वर्षो में उत्पन्न मत व मतान्तर जहां थे, वहीं के वहीं है। उनमें संशोधन का विचार करना भी पाप व अपराध माना जाता है। महर्षि दयानन्द इस धारणा के विरूद्ध रहे हैं। उन्होंने प्रत्येक बुद्धि के विपरीत बात का संशोधन किया है और आज का वैदिक धर्म शायद् संसार के बनने के बाद से इस समय सर्वोत्तम मान्यताओं व सिद्धान्तों से समन्वित है। भ्रम न हो इस लिये यह कहना है कि हमारे देश में महाभारत काल तक ऋषियों की परम्परा रही है। हमारे ऋषि अवैदिक कार्यो का आरम्भ से ही विरोध करते रहे हैं। परन्तु कितना भी करें कहीं कुछ थोड़ा ऐसा हो जाता है जो सिद्धान्त के पूर्णतः अनुकूल नही होता। उसका कारण उसका व्यवहार करने वाले लोगों का अज्ञान व किंचित स्वार्थ भी होता है। समय का चक्र चला और अरब कहलाने वाले देशों में मक्का नामक स्थान पर मोहम्मद साहब से इस्लाम मत अस्तित्व में आया जो समय-समय पर उनके अनुयायियों के अंहिसा व हिंसा समन्वित प्रचार से विश्व के अनेक स्थानों पर फैल गया। यह स्थिति तो भारत से दूर के देशों की रही है। भारत में भी पहले यज्ञों में पशु हिंसा आरम्भ हुई। वर्ण व्यवस्था में गुण, कर्म व स्वभाव से चार वर्ण थे जिनमें एक वर्ण शूद्र था। सबको उन्नति के समान अवसर सुलभ थे। छुआ-छुत व अस्पर्शयता जैसी सामाजिक बुराई वैदिक काल में नहीं थी। परन्तु मध्य काल में इसका उदय हुआ। इसके कुछ कारण अवश्य रहे होगें। आज सारा विवरण उपलब्ध नहीं है। इतना ही कह सकते हैं कि जन्म से किसी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र मान लेने की व्यवस्था वेदों के विरूद्ध होने से गलत थी। इसके साथ ही शूद्रों के प्रति छुआ-छुत का व्यवहार घोर अमानवीय कार्य था व आज भी है यदि कोई ऐसा करता है। ऐसे लोगों का मनुष्य जन्म धारण करना सार्थक व उद्देश्य को पूरा करने वाला नहीं कहा जा सकता। स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन से वंचित कर दिया गया। इसका एक कारण यह हो सकता है कि हमारे ब्राह्मण व पण्डित कहलाने वाले वर्ग ने स्वयं तो वेदों व शास्त्रों का अध्ययन करना बन्द कर दिया व दूसरों को भी इसके अधिकार से वंचित कर दिया। ऐसे अनेक कारणों के उत्पन्न होने से भारत में बौद्ध मत व उसके साथ या बाद में जैन मत का प्रादूर्भाव हुआ। इन्होंने न केवल यज्ञों की ही उपेक्षा व विरोध किया अपितु ईश्वर के अस्तित्व को ही अस्वीकार कर दिया। इसके स्थान पर एक अवैदिक कार्य यह प्रचलित किया गया कि इन मतों के आचार्यो ने अपने मान्य पुरूषों की मूर्तियों को बना कर उनकी पूजा व अर्चना आरम्भ कर दी। सस्ता सौदा ज्यादा बिकता है। अतः वैदिक व पौराणिक मत के लोग अपना मत छोड़ कर इन नये नास्तिक व वैदिक परम्पराओं का विरोध करने वाले मतों की ओर दौड़ने लगे जिससे इन नये मतों के अनुयायियों की संख्या बढ़ने लगी और वैदिक व पौराणिक मत के अनुयायियों की संख्या घटने लगी। इसके बाद स्वामी शंकराचार्यजी का समय आता है।

स्वामी शंकराचार्यजी भारत के दक्षिण प्रदेश में जन्में। बहुत कम आयु में ही उन्होंने शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त कर लिया। उनके काल में जैन मत अपना प्रसार प्राप्त कर चुका था। आर्यधर्म व उसका अज्ञान समन्वित रूप अवनत अवस्था को प्राप्त था। उन्होंने सनातन धर्म की जब यह अवस्था देखी तो उनमें भी धर्म रक्षा का भाव आया। उन्होंने जैन मत की मान्यताओं व सिद्धान्तों का अध्ययन किया तो उन्हें सत्य की कसौटी पर असफल पाया। उन्होंने इनके पराभव व आर्यधर्म की उन्नति पर विचार किया। उन दिनों देश की राजधानी उज्जैन में शासन कर रहे राजा जैन मत के अनुयायी थे। उनसे मिलकर उन्होंने उन्हें अपनी मान्यताओं व सिद्धान्तों का परिचय कराया और उन्हें समझाया कि राजा का कर्तव्य है कि वह सत्य धर्म की उन्नति के लिए विद्वानों में शास्त्रार्थ की व्यवस्था करें और जो मत शास्त्रार्थ में सत्य सिद्ध हो उसे स्वयं भी स्वीकार करें और प्रजा से भी कराये। राजा सुधन्वा उनके विचारों से सहमत हो गये, शास्त्रार्थ हुआ। जैन मत पराजित हुआ तथा स्वामी शंकराचार्य का अद्वैतमत विजयी रहा। राजा ने अपना कर्तव्य मानकर जैन मत को छोड़कर स्वामी शंकराचार्य द्वारा प्रवर्तित आर्य धर्म के उनके अद्वैत-स्वरूप को स्वीकार किया। उसके बाद देश भर मे बौद्ध व जैन मत पराभूत हुआ और एकेश्वरवाद का प्रतिपादक अद्वैत मत प्रवर्तित हुआ। स्वामीजी ने देश के चारों दिशाओं में धर्म प्रचारार्थ चार मठ स्थापित किये जो आज भी संचालित है। इस घटना के बाद बौद्ध व जैन मत के प्रभाव व जनसामान्य की अविवेकपूर्ण रूचि के अनुसार तथा स्वामी शंकराचार्य जी के समान गम्भीर विद्वानों व प्रचारकों की अनुपस्थिति के कारण मूर्तिपूजा आदि अवैदिक मान्यताओं से युक्त आर्यधर्म प्रचलित रहा व इसमें दिन-प्रतिदिन अन्धविश्वास व पाखण्डों की वृद्धि होती रही। इसके बाद के समय में मूर्ति पूजा को महिमामण्डित करने के लिए पुराणों की रचना भी हुई और देश वेद के सत्य मार्ग से हट कर मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, अस्पर्शयता, बाल विवाह, बेमेल विवाह, मांसाहार, मदिरापान जैसी अनेक बुराईयों का प्रचलन होकर समाज दिन प्रतिदिन अवनति को प्राप्त होता रहा। इस सबके परिणाम स्वरूप 8-वीं शताब्दी में पहले भारत यवनों का व बाद में अंग्रेजों का गुलाम बना। इन दिनों भारत में आर्य धर्म के अनुयायियों का न धर्म सुरक्षित रहा न मान-मर्यादा और न आत्म-सम्मान ही। इतनी जलालत देखनी पड़ी की जलालत को भी शर्म आ जाये। इन सभी विदेशी विधर्मी लोगों ने जो कुछ किया वह मानवता के विरूद्ध था तथा अपवादों को छोडकर, पाशविक प्रवृति के अमानवीय कार्यों की श्रेणी में आता है।

अंग्रेजों ने भारत को स्वतन्त्रता अपनी इच्छा से प्रदान नहीं की। भारत को स्वतन्त्र करना उनकी मजबूरी थी। आज भी उन्होंने कुछ थोड़े से देशों को गुलाम बना रखा है, ऐसी जानकारी नैट पर उपलब्ध है। वह कौन सी मजबूरी है जिस कारण अंग्रेजों को भारत को स्वतन्त्र करना पड़ा तो हमें लगता है कि द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामों के कारण उनको भारत से जाने का निर्णय करना पड़ा। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने भी कम चुनौती नहीं दी। हमारे क्रान्तिकारियों ने भी अंग्रेजों की नींद हराम कर रखी थी। वह जान चुके थे कि अंहिसात्मक आन्दोलन का सीमित प्रभाव है परन्तु क्रान्तिकारी तो उनके बड़े-बड़े अधिकारियों तक के प्राण ले रहे थे। हमें लगता है कि इंग्लैण्ड व भारत के बीच की जो दूरी थी और समुद्री मार्ग में जो कठिनाईयां होती हैं वह भी एक कारण हो सकता है। हमारी सेनाओं में भी आजादी की भावना व विचार घुस चुके थे। सैनिक व सिपाही मंगल पाण्डे का उदाहरण तो सामने है ही। हमें लगता है कि भविष्य में अंग्रेजों को भारतीय सेना के जवानों से भी खतरा नजर आता था। अंहिसात्मक आन्दोलन से भी उन्हें किंचित कष्ट तो होता ही था परन्तु यह सीमित व अधिक विचलित करने वाला नहीं था। अंग्रेज यह भी जानते थे कि गांधीजी जब तक हैं तब तक ही शायद अंहिसा की नीति पर भारत चल रहा है, बाद में क्या होगा इसके प्रति अंग्रेजों में अनिश्चितता थी और वह इससे परेशान थे। अंग्रेजों को सम्भवतः लगा कि वह समय ही उनके लिए उपयुक्त है। बाद में यदि परिस्थितियां खराब होगीं तो उन्हें छोड़ना तो पड़ेगा परन्तु शायद वह उनके लिए अधिक दुःखदायी हो। आजादी के आन्दोलन की दोनों धाराओं, क्रान्ति व शान्ति या अंहिसात्मक, को पोषण आर्य समाज से ही मिला। सबसे पहले स्वतन्त्रता व आजादी का विचार कहां से आया तो इसके लिए महर्षि दयानन्द के साहित्य में अनेक उल्लेख मिलते है। सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम् समुल्लास का उल्लेख कि 'कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह-रहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय व दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।' यह वाक्य स्वामी दयानन्द ने कांग्रेस की स्थापना से 10 वर्ष पूर्व सन् 1875 में सत्यार्थ प्रकाश में लिखे थे। इसके अतिरिक्त सत्यार्थ प्रकाश में अन्य स्थानों पर, उनके अन्य ग्रन्थों यथा आर्याभिविनय, संस्कृत वाक्य प्रबोध आदि में भी स्वदेशीय राज्य का मार्मिक शब्दों में उल्लेख किया गया है। हमें लगता है कि महर्षि दयानन्द के यही शब्द भावी स्वतन्त्रता आन्दोलन के सूत्र वाक्य या आधार स्तम्भ बने। स्वामी दयानन्द की देश भक्ति का एक पहलू यह भी है कि वह सन् 1824 में अपने जन्म से लेकर सन् 1857 की प्रथम क्रान्ति तक का उल्लेख तो करते हैं, परन्तु सन् 1857 से कुछ पहले व 1860 तक का विवरण अपने अनुयायियों को नहीं बताते। सत्य कुछ भी हो परन्तु यह रहस्यमय है। 1857 में अपनी भूमिका या अन्य कार्यो का विवरण न देना रहस्य को जन्म देता है। न बताने के पीछे का कारण भाग लेना हो सकता है। यदि न लेते तो वह विवरण अवश्य देते जिसका कारण कि उन्होंने उससे पूर्व व पश्चात का विवरण दिया है। सन् 1857 में महर्षि दयानन्द 33 वर्ष के युवा थे। ऐसे युवक थे जो विगत 15 वर्षों से देशभर में घूम कर साधु-संन्यासी-योगी-विद्वानों को ढूंढ रहा था, उनसे ज्ञान प्राप्त कर रहा था तथा देश की स्थिति को देख रहा था। क्या ऐसा व्यक्ति देशभक्ति के कार्यो से दूर या उदासीन रह सकता है, हमारा अनुमान है कि कभी नहीं? किसी भी क्रान्तिकारी ने अंग्रेजों के शासनकाल में अपने कार्यो का विवरण नहीं दिया। विवरण न देने से कोई क्रान्तिकारी, क्रान्तिकारी नहीं रहता, ऐसा कोई स्वीकार नहीं करेगा। इससे स्वामी दयानन्द के एक देशभक्त व क्रान्तिकारी या उनका सहयोगी या फिर उनके प्रति सहानुभूति रखने वाला तो हो ही सकता है। हमें तो यहां तक भी लगता है कि क्रान्ति के गुप्त सूत्रधारों में से कहीं वह एक न रहे हों, इसी कारण वह पर्दे के पीछे रहे और उन्होंने अपने कृत्यों को गुप्त रखा क्योंकि उसका उल्लेख करने का अर्थ था कि उनके जीवन क्रम की समाप्ति। बताया जाता है कि कांग्रेस के इतिहास लेखक श्री सीताभिपट्टारमैया ने लिखा है कि आजादी के आन्दोलन में भाग लेने वाले आर्य समाज के अनुयायियों की संख्या कुल आन्दोलनकारियों की 80 प्रतिशत थी। यदि आर्य समाज की स्थापना न हुई होती तो इन लोगों के आन्दोलन में भाग न लेने से आन्दोलन का प्रभाव उतना ही कम होता फिर स्वतन्त्रता का लक्ष्य पूरा होता या नहीं, कहा नहीं जा सकता। यह भी उल्लेखनीय है कि अंहिसात्मक आन्दोलन के प्रणेता गोपाल कृष्ण गोखले थे। महात्मा गांधी इन्हीं के शिष्य थे। गोखलेजी महादेव रानाडे के शिष्य थे जो कि स्वयं को महर्षि दयानन्द का शिष्य मानते थे और यह सर्वविदित भी था। उपर्युक्त अनेक कारणों से अंग्रेजों ने भारत को छोड़ने का निर्णय किया। 15 अगस्त, 1947 को अंग्रेज भारत का विभाजन कर, उसके दो खण्ड, एक भारत व दूसरा पाकिस्तान, करके अपने देश इंग्लैण्ड रवाना हुए।

(शेष अगले अंक में)

आर्य समाज जनकपुरी में कवि गोष्ठी व सरस्वती विहार का उत्सव सम्पन्न

रविवार, 4 मई 2014, आर्य समाज, बी ब्लाक, जनकपुरी, दिल्ली में कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया। मंच पर बायें से आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, स्वामी सोम्यानन्द जी, स्वामी आर्येश्वरानन्द जी, डा. पूर्णसिंह पंचाल, डा.मनोहर अभय, संयोजक डा.सुन्दरलाल कथूरिया, डा.अनिल आर्य व श्री हरिपाल सिंह जी व मुख्य अतिथि पूर्व महापौर डा. महेश चन्द शर्मा रहे। द्वितीय चित्र में आर्य समाज, सरस्वती विहार, दिल्ली के उत्सव पर सम्बोधित करते डा. अनिल आर्य, साथ में आचार्य अखिलेश्वर जी, प्रधान श्री ओमप्रकाश मनचन्दा व आचार्य नरेन्द्र मैत्रेय। संचालन मंत्री श्री अरूण आर्य ने किया।

आर्य समाज मस्जिद मोठ का चुनाव सम्पन्न

प्रधान-श्री चतर सिंह नागर

मन्त्री-श्री ओम प्रकाश सैनी

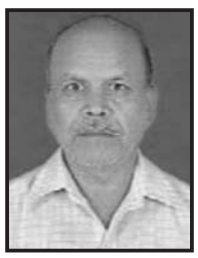

कोषाध्यक्ष- श्री देवेन्द्र कुमार

आर्य समाज मस्जिद मोठ का 2014-2016 का चुनाव दिनांक 21 अप्रैल 2014 को सम्पन्न हुआ। इसमें निम्न अधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित किए गए। प्रधान- श्री चतर सिंह नागर, मन्त्री-श्री ओम प्रकाश सैनी, कोषाध्यख- श्री देवेन्द्र कुमार

श्री सुनील गर्ग प्रधान निर्वाचित

आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद के चुनाव में श्री सुनील गर्ग-प्रधान, श्री प्रवीन आर्य-वरिष्ठ उपप्रधान, श्री वीरसिंह आर्य-महामंत्री व श्री सन्तलाल मिश्र-कोषाध्यक्ष निवार्चित हुए। तदर्थ बधाई।

परिषद् का स्थापना दिवस 3 जून को

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की स्थापना 3 जून 1978 को डा.अनिल आर्य ने की थी, उस दिन सभी प्रान्त व शाखायें इस पर्व को उत्साहपूर्वक मनायें।

डा.सुन्दरलाल कथूरिया ''वेद श्री'' सम्मान से सम्मानित

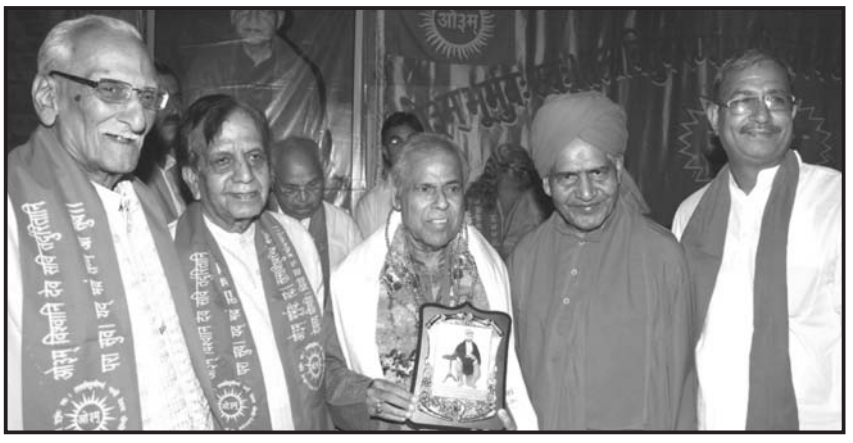

रविवार, 11 मई 2014, स्वामी दीक्षानन्द स्मृति दिवस पर तपोवन आश्रम, देहरादून में वैदिक विद्वान डा. सुन्दरलाल कथूरिया को ''वेदश्री'' सम्मान से सम्मानित करते हुए श्री दर्शन अग्निहोत्री, स्वामी दिव्यानन्द जी, डा.वेदप्रकाश गुप्ता व श्री महेन्द्र भाई।

शोक समाचार

श्री सत्यप्रकाश सपरा का आकस्मिक निधन

परिषद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य के छोटे भाई श्री सत्यप्रकाश सपरा,आयु 45 वर्ष का गत 5 मई 2014 को 'मिश्र' में आकस्मिक निधन हो गया। अग्रज भाई श्री ओम सपरा, लायन श्री प्रमोद सपरा, श्री विजय सपरा, श्री संजय सपरा से यह सबसे छोटे थे। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से विनम्र श्रद्धाजंलि। -महेन्द्र भाई, महामंत्री

युवा निर्माण से होगा राष्ट्र निर्माण ।। ओ३म् ।। चरित्र बचेगा तो देश बचेगा

शिक्षाविद् डॉ. अमिता चौहान व डॉ. अशोक कु. चौहान के सान्निध्य में

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का राष्ट्रीय शिविर

शनिवार 7 जून 2014 से रविवार 15 जून 2014 तक

ओ३म्
बलमुपास्व

विशाल युवक चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व विकास शिविर

स्थान : ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल, सैक्टर-44, नोएडा, उ०प्र०

उद्घाटन समारोह

रविवार 8 जून, प्रातः 11.00 बजे

भव्य समापन समारोह

रविवार 15 जून, सायं: 5 से 7:30 बजे तक

सभी शिविरार्थी शनिवार 7 जून 2014 को सायं 4 बजे तक अवश्य पहुंच जाएं।

निवेदक

डॉ.अनिल आर्य	आनन्द चौहान	दर्शन अग्निहोत्री	यशोवीर आर्य	महेन्द्र भाई
शिविर अध्यक्ष	शिविर संरक्षक	स्वागताध्यक्ष	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	शिविर संयोजक

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970